

बेटों की पार्टी

प्रमिला गगल



कृष्ण जनसेवी एण्ड को०

बीकानेर

पृष्ठ संख्या	68 + 8 = 76
कापीराइट	लेखिका
प्रथम संस्करण	'अक्षय तृतीया 1987
मूल्य	22 रु मात्र
प्रकाशक	वृष्ण जनसेवी एण्ड को दाऊजी मंदिर भवन बीकानेर
मुद्रक	ज-स.पी प्रिन्टम दाऊजी मंदिर बीकानेर

जन-कवयित्री : श्रीमती प्रमिला गगल

वर्षों से बीकानेर को और प्रवारात्तर से राजस्थान को एक ऐसी कवयित्री की तलाश थी जो सामाजिक संवेदना को काव्य रूप में स्थापित कर सके, अपनी वेदना को जन-वेदना से जोड़कर कविता और मनुष्य के चिरंतन रिश्ता को अभिव्यक्ति दे सके, सहज सम्प्रेषणीयता किंतु गहन मामिवता के साथ पाठक श्रोता को भीतर तक 'छू' सके, संवेदना के गहरे स्तर तक अपनी पैठ कर सके और बिना हिचक से जनता से जुड़ने वाली कविता 'रच' सके । श्रीमती प्रमिला गगल के रूप में ऐसी एक कवयित्री हमें मिली है ।

उनका मूल स्वर 'पीड़ा' है पर पीड़ा जनित नराशय अथवा होनता उनकी कविताओं पर कभी भी हावी नहीं होनी । पीड़ा की तीव्रता सघष की भावना को और कभी-कभी विद्रोह के स्वरा को मुखरित करती हुई लगती है । दामोदर विद्रोही की यह बहन भीतर से विद्रोहिणी है । सामाजिक घात-प्रतिघात से विद्रोह, मानव को 'क्षुद्र' बनाने वाले किसी भी पडयत्र से विद्रोह, जमी हुई पशाचिक व्यवस्था से विद्रोह और यहाँ तक कि सामाजिक कमकाण्ड बने हुए घम' से विद्रोह । व्यथा से पिरोये हुए उनके गद्द अतत सघष के अनवरत यात्री बन जाते हैं । अपने सजन की साधकता वह इसी में समझती है कि व्यवस्था के इस "आतक" से जूझ सके ।

आज के युग में समय की चिन्ताओं से निरपेक्ष कौन रह सकता है ? अदृश्य और गहरे सत्य की तलाश के नाम पर कविता के रूपवाद में खोये हुए लोग भले ही तटस्थ मुद्रा धारण कर लें, आज के यथाथ का 'भोक्ता' अथवा संवेदनशील 'दृष्टा' तो उससे अछूता नहीं रह सकता । दहेज,

नारी-दहन उत्पीडन, आतंकवाद और निर्दोष व्यक्तियों की हत्या होती रहे और कोई कवि अथवा कवयित्री फूल-पत्ती की बात ही करती रहे— यह विरोधाभास मला कैसे चल सकता है ? शीव पक्षी की पीढा को सनातनता किसी ने तो दी ही होगी ? विरहिणी यक्षिणी की वेदना को किसी ने तो समझा ही होगा ? दीन हीन लोगों के दारिद्र्य से कोई तो संवेदित हुआ होगा ? कविता मानव से शुरू होकर मानव तक समाप्त होनी है या या कहें कि “मानव” नामधारी आदमी को “मानव” बनाती है। उसका नया रचाव करती है, उसे पुनर्संस्कारित करती है। श्रीमती प्रमिला गगल यही सब कुछ कर रही है। क्यों से निरंतर, बिना रुके, धनवत । उनकी कविताएँ एक जीवन दर्शन है जो मनुष्य को मनुष्य बनाये रखती है।

उनकी कविताएँ क तीन कोण हैं—सायकता, प्रासंगिकता और प्रेयणीयता। एक चेष्टा है—सत्य से साक्षात्कार और एक सद्य है नाश्वत मूल्यों की परिक्रमा।

उनकी कविताएँ मे छलछलाता देश प्रेम है। उनकी ‘भारतीयता’ न तो उह आचलिकता से काटती है और न अन्तर्राष्ट्रीय बहुत्व अथवा सावभौमिकता से अलग ही करती है। देश के नौजवाना [युवक-युवतियों] को सामर्थ्य में उनको पूरा आस्था है। भाषा, धर्म, वर्ग आदि कटावा और छलावों को तोड़कर एक सम्पूर्ण मानव को फलता-फूलता हसता-खिलता और पनपता देखना चाहती है। अपनी घरती स लगाव है उह। एक लोक कल्याण मूलक जीवन दृष्टि हैं उनमें। उनकी कविताओं में सामाजिक दृष्टि है तो सौंदर्य की प्रतीति भी है। व्यक्तिवादी, भौतिकता की चक्काचौध उनकी कविताएँ म स्थान नहीं पाती—यदि किसी को स्थान मिलना है तो वह है खाचा से हटी-बटी ‘पूर्ण मानवता’।

कविता क्रांति की तरह सीधा परिवर्तन नहीं करती -वे यह जानती हैं पर कविता परिवर्तन का मानस तो बना ही सकती है। परिवर्तन होने की स्थिति में उसे सही दिशा और गति तो दे ही सकती है। मनुष्यता की प्यास को तोब्र तो बना ही सकती है। श्रीमती प्रमिला गगल की कविताएँ इसी दिशा की सनेतिकाएँ हैं।

उहने हिंदी, उर्दू, भोजपुरी, ब्रज और राजस्थानी में रचनाएँ लिखी हैं। कविता का यह पंच भाषाई प्रसाद लोक कल्याणकारी है। भाषाभाषा के कारण भाषा में भटकाव नहीं है। उहने गीत, मुक्तक और छंद लिखे, कविताएँ—नउमे लिखी, गजला की रचना की और इनसे अलग मुक्त छंद में भी 'रचाव' किया। पर मूल स्वर एक ही रहा—व्यथा से विद्रोह तक का स्वर नारी है अतः नारी की वेदना को वे जानती हैं पर वेदना का 'बखान' करके चुप नहीं रहती। समाज के 'कोढ़' का मिटाने के लिए आह्वान भी करती हैं। यह कोढ़ कभी धेज, नारी हत्या एष उत्पीडन के रूप में सामने आता है तो कभी तस्करी, भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद, एव रिश्वत आदि का रूप धारण करता है। यही 'कोढ़' अपनी आत्यंतिकता में आतंकवाद बन जाता है। समाज को कोढ़ मुक्त करना उनकी कविताभाषा का चरम लक्ष्य है। जब तक यह कोढ़ कायम है, न दीवाली उह अच्छी लगती है और न होली, न सावन के बादल सुहाते हैं, न ईद रूचती है। मानवता को खोजती उनकी निगाहें जगह—जगह भटकती हैं—मधुमक्खी के मधु सचय की तरह यह भटकाव भी लोक कल्याणकारी है। बहुर्षिये समाज के दामन को चाहे चाक चाक करना पडे पर उसके असली नुशस रूप को उद्घाटित किए बिना वे नहीं मानती। इस बेपदगी में उह आनंद मिलता है। जब-जब दगा से नीर भरता है, वे वास्तविक कल्याण को तलाशती हैं पर जब यह कल्याण प्यार, वात्सल्य, राग, अनुराग विरह, मिनन कही पर भी नहीं मिलती तो उनका मोह भग हो जाता है। मोह भग की स्थिति में मौन नहीं सधप उनका स्वर बनता है। अहम् चाहे समाज का ही अथवा व्योम का या बादल का, अहम् को चूरना उनकी कविता का अभीष्ट रहना है। उनके अन्तर की ज्वाल को न तो सुधारकर की राशियाँ शीतल कर सकती हैं और न सध्या की मुस्कान। वह ज्वाल तो समय पाकर ज्वालामुखी की तरह विस्फोट करना ही जानती है। अन्तर से विद्रोहिणी जो ठहरी प्रमिता गगल।

प्रमिला जी की अनेको कवि सम्मेलन में सुनने का अवसर मिला। शब्दा का जोश और आक्रोश उनके चेहरे पर देखा जा सकता है।

शब्दा की मर्महित वेदना चेहरे की भाव भंगिमाप्राप्त म धा जाती है—उनका चेहरा ही जस कविता की किताव बन जाता है। हजारों श्रोताप्राप्त म व वेपडक वोल सकती हैं, बीच में यदि कोई टाक दे तो उस फटकार सकती हैं, पूरी तमयता के साथ तरनुम म भयया तहत म कविता पाठ कर सकती है।

प्रमिला जी ज्यादातर छंद में लिखती हैं। छन्द का अपना अनुशासन होता है। इस अनुशासन में 'कहीं कहीं' शकिल्य हो तो भरकरने लगता है। भाशा है प्रमिलाजी छंद के अनुशासन को कहीं भी शकिल नहीं होने देगी।

समय के साथ-साथ उनकी कविताप्राप्त में और अधिक प्रोडना आणगी भाया म और अधिक प्राजलता, स्वरा म और अधिक पैनापन और सत्य क प्रति और अधिक आस्या उजागर होगी और म कविताएँ शाश्वतता की ओर बढ़ती चलेंगी, बढ़ती चलेंगी मही भाशा है।

भवानी शकर व्यास विनोद

अक्षय तृतीया 1987

‘मैं’ परिचय	1	जग कैसा है ?	38
बेटी की पाती	2	प्रेरणा	39
मुक्तक	4	प्रश्न	40
नाग दहेज	5	पहरे	41
बिंदु काण्ड (खुलापन)	7	आस	42
पागल	8	रेखा	43
यज्ञ आहुति	9	मेरे गीत	44
आसनाद	11	शाप	45
नया ढाचा	13	मन	46
धमक धमक	15	गीत बादल	47
भूक वेदना	18	सुधि	48
एक खत	19	कूदन	46
वेश्या की पुनार	22	नौजवानो के नाम	50
राखिया	24	वागडोर	52
दद	25	धुवाभो से	55
सावन	26	बैर व्यथ के	57
दिवारी (दीपावली)	27	लोह पुरुष	58
होगी (होली)	28	मानवता	59
फाग	30	वेदाग है	60
हद	31	दपण	62
बदरिया (वर्षाऋतु)	32	(असामाजिक तत्वों के नाम)	
अहसास	33	मुक्तक	66
गजल से'	36	मुक्कनक	67
गजल	37		

“मै”

“सुगन्ध हीन पुष्प हू,
महत्त्व-हीन वस्तु हू
घरा गगन प्रलय बरे-
अस्तित्व हीन तत्त्व हू।”

परिचय

“गीतलता का भास कराती
किंतु प्रज्वलित आग हू मै,
चासन्ती अमार सजी हू
पर अबोध वैराग हू मै,
ममर-बाणी की साधक पर
घरा व्योम हुकार हू मै
अपने ही पथ की पूजक पर
स्नेह भरा चिराग हू म ॥

आकाशवाणी से प्रसारित

29 11 82



बेटी की पाती

बिठिया पार्स जो बटी की गगुरान की
 हूँ भाव बिभोर मा बहाल भी ॥
 दोटी-गोरी पडासिन ने घर वो गर्
 पड दो जल्नी से यहना मबर क्या नई ? ॥
 बीता एक बरम ना मिनी कुण्ड मबर
 जल्नी पड दा वजिन ना पचे है मबर ॥
 पड पडोसिन जरा हिचकिचान लगी
 बोली माता बता दो लिया क्या सही ? ॥
 क्या बनाऊँ लगी नडगडाने जुमा
 हाय ! रमिया नहीं जा गद रजुवा ॥
 घात्र फटने लगी एक गई धमनिया
 मा दहाडी कि जम गिरी विजलिया ॥
 क्या जली है ? मुझे चल गया है पता
 उन पिताचा न आखिर मारी सुना ॥
 पदा होते ही मैं घोट दती गना
 दिन विधाना न मुझका लिखाते भना ॥
 क्या पता था कि अर्षी है डोनी नहीं
 उड गई मरी कोयल तू बोनी नहीं ।
 पूजे देवी देवता करी मानता
 तब विधाता ने जाकर दई इक सुना ॥
 हर्षा परिवार सब, धी खुगी गाव म
 बाभन म ना रही हाय अब गाव म ॥

है यही ठेहरी और है यही आगना
 तेरा गिर गिर के चलना और नाचना ॥
 याद आता नहीं अब समानी हुई
 बोले मुखिया करो ब्याह आगानी नहीं ॥
 बेटी राज बरेगी सुहागिन मदा
 घर मिला राम सा सजको मिलता कहा ॥
 बँसे भूटे ये पडित य भूठी बोनी ।
 बारह वर्षों की रमिया चढाई डोली ॥
 हाथ दगो कि तुमने सजाया उसे
 अर्थाँ सम डोली म हा । बिठाया उसे ॥
 आख फटी कि जाते देखा उसे
 नीट के फिर न आत देखा उम ॥
 धान म बैन अब तक रत्न के भरे
 मा । भुना लेना जल्दी किया क्या पर ? ॥
 दूर गेसी हुई वह कि होती गई
 फिर हसी वह कहा देखी रोती हुई ॥
 सोचा समधी खुगी होगी बेटो सुखी
 मागें पूरी करी दुहिना ही ना दुखी ॥
 हाय ! बेची जमी घर भी रेहन पडा
 बिक गये तन के जेवर ये टपरा लडा ॥
 पाव चादर के बाहर फैलाती रही
 बेटो सुख के लिये घर लुटाती रही ॥
 याद आया आचानक थी आई खबर
 माता भिजवादी जल्दी से मोटी रक्म ॥

जितनी जल्दी हा करना प्रवच मेरी मा
वना जीना है दुलभ समझ मरी मा ॥
मै लगा गई मौन हाय करती भी क्या
कुछ बचा ही नहीं बेचती आखिर क्या
बिस तरह से तडप कर जली होगी तू ?
सोचती हू कि कंस मरी होगी तू । ॥
भीगुरा, चीटिया से तू डरती सदा
कैसे सह पाई होगी वह आपदा ? ॥
आसमा से कही गाज गिरती नहीं
हाय ! क्या हू मै जिदा क्या मरती नहीं ॥
कोई मारे सताये कही ना तुझे
भेजा मैने नहीं विद्याशाला तुझे ॥
धूल धुटनो की आचल स पोछी सदा
लग न जाये खुरच चित्ता की सबदा ॥
आने हागे अभी मुह दिखाऊगी क्या ?
हा ! सुता ना रही, ये बताऊगी क्या ? ॥
घर भी उजडा सभी बाग उजडा मरा
गोद सूनी हुई पिंजरा खाली मेरा ॥

आकाशवाणी स प्रसारित

24 4 83

मुक्तक

जो रग सजाये वह तस्वीर बनने नहीं देंगे
तुमको भारत की तक्दीर बनने नहीं देंगे,
स्वप्निल रगा को सजाओ सवारो अपनी हृद तब
भारत से जुदा वो कश्मीर बनने नहीं दगे ।

3585 आकाशवाणी से प्रसारित

नाग दहेज

मादि काल से पूजित वन्दित है वह दुर्गा शक्ति मा ।
 विद्या वारिधि बुद्धि जीविया की है विमला भक्ति मा ॥
 ऊच-नीच सबकी जो पूजित वह है विष्णु अर्धांगिनी ।
 चचला चपला नाम अनेको वतमान की वह जननी ॥
 जीजा बाई मातृ गिवा की तुमन क्या सुनी होगी ।
 नाना साहब की दुहिता मैना की व्यथा सुनी होगी ॥
 अजर अमर मानस का गायक अमर हो गया जो तुलसी ।
 रत्ना से जो मिली उपक्षा गौरव भी पाई हुलसी ॥
 बँठा उसी तने को बाटे महा मूख था वह काली ।
 पाकर उपालम्भ पत्नी का रघुवशम् जिसने रच डाली ।
 सत् व्रत की रक्षा के हित जहा धधकती जौहर ज्वाला ।
 भक्ति भाव म हो विभोर अमृत सम विष भी पी डाला ॥
 यह भारत है इस भारत की रही सदा, आदश नारिया ।
 पूजन अचन से रण तक सारथि सीमा बद्ध नारिया ॥
 फिर ऐसी गुचिता धरती पर कैसा हा-हाकर मच रहा ?
 शाश्वत परम्परा स्वयंवर कैसा अत्याचार मच रहा ?
 ऐसी गौरवपूण बदना [पर] नित होते क्या अत्याचार ?
 नही शम से माया भुक्ता नतिव पतन हा रहा आज ॥
 लेन देन व्यापार बड़ा बेटा पर लगी बोलिया है ।
 रूप रग गुण अवगुण पीछे पहले बजती थँलिया हैं ॥
 रोता गुण और रूप सिसकता ज्ञान विचार धरे रह जात ।
 बेटा अफसर धरे नीकरी सब्ज बाग गहरे हो जाते ॥

बड़े एँठ पर बापू बहुत दिगलामा घपनी वह सूची ।
 धैली से पहले दिसलाटा सामाना की लिस्ट समूची ॥
 एर गैर नत्थुखैर नहीं जो सूखा व्याह रचा ले
 हम समाज म बड़े प्रतिष्ठित धाना कस इसे पचालें ? ॥
 नाप जोय पूरा हा जाय तो बटी की भावर पूरी ।
 गर्वावित्त मस्तक हो जाय वर्ना भावर रह भ्रमूरी ॥
 मीला बटी राती जाती स्वजन दहल दहल रह जाते ।
 गैया सी मैया डकराती, भरमा पिघल पिघल बह जात ॥
 फट जाय स्टोव भ्रचानक जल जाय साडी का पत्ला ।
 धासे से तेजाब पी गई लटक गया फासी का फंदा ॥
 हाया की महदी, पैरा की नहीं महावर मितने पानी ।
 डस जाती दहेज की नागिन क्वारे भरमाना सा जाती ॥
 मन गढत कुछ गढी कहानी नहर तक पहुचाई जाती ।
 हाय ! सुता की किम्मत कैंसी माता की छाती फट जाती ॥
 किलने बने समाज सुधारक केन्द्र नये नित खोले जाते ।
 अग्रसन, दाधीच, राम सब जाति शपथ म तौलें जात ॥
 जब तक मानस स्वच्छ न हागे भौतिकता दूर जायगी ।
 मन पर सताप की छाप नहीं पोरुपता चूर हो जायगी ॥
 पुरुपाथ विजय जब पायेगा काला धन भ्रभय न पायेगा ।
 विश्वास दिलाती हू सबको फिर नाग दहेज न भयगा ॥

आकाशवाणी से प्रसारित

11 9 83



विन्दु काण्ड (खुला प्रश्न)

लटक गई हा बिन्दु बिटिया बड़ी रसाई-भु से ।
 बिना मौत ही मरी अभागी हा दहेज के बरस ॥
 बिना नाप के मुह फँसे है वात हजारा लाखों की ॥
 बरत है रगा की बातें बिन नका प्रिन खावा की ॥
 बीस बप की सिफ़ अवस्था निवासिनी वह राची की ।
 भटका देला बहुत पिता को लिखा वात जो साची थी ॥
 करते हा दिन रात एक तुम चिन्तित हो बस मरे लिये ।
 हो दहेज पूरा कैसे भी सभी खुशी हा मेरे लिये
 म क्या थी म अबला थी पर म इतनी नहीं तिरीह
 सदा पराया धन क्या समझा धन सकती थी कटक हीन ॥
 मारे शम हया के कारण कभी नहीं था मुह खोला ।
 बड़ी घापदा बड़ी समस्या अपना की मने सोना ॥
 लालच खुश हाता धन पाकर मैं कैसे नागिन बन पाती ।
 पीकर दूध साप फुफकारे मुझे वही खुशी इस जाती ॥
 मुझे सदा स नफरत बाबुल इन दहेज के नागा से ।
 कर दोगे सबस्व योद्धावर मुक्ति नहीं इन मागा स ॥
 इसलिय म अपनी लीला अपन आप खतम करती
 बटी की डाली उठती है अर्थी नहीं उठा करती ॥
 एक नहीं कितनी ही बिन्दु मर जाती वे—आवाज
 कैसे ही कम नहीं रुडिया और हुई काढ मे खाज ॥
 अपने अपने मानस को अपने आप प्रदल डालो
 इस रगीन चकाचौंध का पैरा तले कुचल डालो ॥
 इस दहेज के हवा कृ ड म कितनी भी धातुतिया होगी
 कितनी होली और गप है कितनी ज्वाना और जनेगी ॥

पागल

घडा सीखचा के जो पीछे बार बार सिर भटके ।
 कभी हस रहा कभी रो रहा हाथ पाव को पटके ॥
 सभी उसे पागल कहते हैं सना हीन दुहाई ।
 अच्छे खासे एक मनुज की हालत किसने बनाई ॥
 जलती चिता देख वह भाया अपनी ही बहिना की ।
 अतिम दशन उसे हुये ना वह गरीब की बहिना थी ॥
 एक बरस से पूव बहिन की शादी की थी धूम से ।
 कया-दान किया इसी ने दी थी विदाई चूम के ॥
 मागा की फिर हुई बढीतरी जिनका आदि न अन्त ।
 आखिर मे "ना" कर बैठा होकर मैया तग ॥
 एक इसी "ना" के कारण हो गया दुलभ जीना ।
 एक जून की दो रोटी बहता खून पसीना ॥
 तग हा गई इवासें गिनती फिर भी मागे राज की ।
 फिर दहेज की भूख खा गइ खरब कहानी रोज की ॥
 गला दबाकर मार लिया दाप चरित्र—हीनता का ।
 चरित्र-हीन अमीरी जीती कहा चरित्र दीनता का ? ॥
 सुनी बहिन की मृत्यु अचानक दगा हुई यह भाई की ।
 फूट फूट पागल रोता है यह स्मृति मा जाई की ॥



यज्ञ आहुति

नित नई बालायें आहुतिया बनती है
ये दहेज का यज्ञ न जाने कब पूरा होगा
संघर्षों की बात अगर हो तो भुगतें हम
अमानवीय ढंग का प्रचलन कब पूरा होगा ?
कही जली तो कही जलाई जाती है,
कही मारकर लटकाई भी जाती है
धरे-धरे स्टोव कही पर फट जाता है—
घोर कही तेजाब पिलाई जाती है ।
चूल्हा का तो गया जमाना
आग दिला की जिंदा है ।
गैस लीक होने लगती है
मानवता शमिंदा है ॥
अधी करत मिच भावकर
गला घोट देते हैं लोग,
काट काट बोरी म भरकर
कही छोड देते हैं लाग ।
पशुता की निममता की
जब तक स्थिति बनी रहेगी,
आज की स्थिति से भी बढ़कर
स्थिति अपनी तनी रहेगी ।
अपने बलबूते पर जा हा
उससे धीरज धरना सीखो,

कमठ बनकर जीना सीखो
 जिधो सदा वह मरना सीखो ।
 भीतिक सुख सुविधा के खातिर
 पशुता को तो मत अपनाओ ।
 जीव जीव का समझ के नाता
 हिंसा को मत ताज पहनाओ ॥
 ऐसा न हो वही तुम्हारी छाया से भी
 परे रहे ये नारी जाति ।
 सुख साधन तुम को रोयेंगे
 ज्वाल बने य नारी जाति ॥

भाकाशवाणी से प्रसारित

15 11 84



आर्त्तनाव

नित्य नई खबरें छपती हैं सास बहू बे भगडे ।
 घर को भाग सडक पर फैली दो चकमक ज्यो रगडें ॥
 सदा गरीबी अभिशापित थी उससे कहीं अमीरी ।
 यही अमीरी बन बैठी है वदनसीब जागीरी ॥
 ठाठ बाट वैभव ऐश्वर्य से पालित हैं आरायें ।
 भासमान की चाटी झूती असत की इच्छायें ॥
 धैर्य और सतोष खा गया, खा गया भाई चारा ।
 निज का उदर भरे मडारे छीन-छीन परचारा ॥
 कल्पनातीत सुखा की इच्छा अमत भरी हवाये ।
 श्वास-श्वास स्वर लहरी गूजे गुलशन बन फिजायें ॥
 सब पर मूढमति का पदा भरी विद्वत्ता हम म ।
 नीति कोई हो कूट राज या स्वाध सभी है हम म ॥
 अमिट नाम खुदवा देंगे अपना वृत्त बनवाकर ।
 आलय धम अनाथ या विधवा कम हेतु बनवाकर ॥
 अपने पापा की पूजा ये कस रहे सम्हलकर ।
 इसी लिये कुछ चंदा देंगे अपना नाम बदलकर ॥
 ऐसे व्यभिचारी विचार जब मन पर हावी हाग ।
 विना स्वाध सत्कर्म कहा बस मपने भावी हाग ॥
 क्या दहेज का कु ड भरगा स्वाहा हागी अवलायें ।
 स्वाधमयी सामग्री हागी नारी ही होगी समिधायें ॥
 सोचो जरा गौर से सोचो अक्ल के ठकेदारो ।
 खुले हाथ से दान किया है हम पर जरा विचारो ॥

पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण से टिका हुआ आकाश है ।
 इसको तुम मा धरती कहते स्त्री का आभास है ॥
 राजनीति में कूटनीति में शक्ति भक्ति में देखो ।
 लक्ष्मी स्वप्ना की मलिका का साभ्र भोर में देखो ॥
 सुमधुर कोकिल बठी गूजे लगती भ्रमत वाणी ।
 भूम भूम ललिका छाया दे वर्षा सुखद सुहानी ॥
 सेवा त्याग सदा अपनाया हमने नहीं सताया ।
 निष्ठुर इस समाज ने हमको बलि का बकरा बनाया ॥
 पुत्री बन सम्मान पिता को भगिनी बन भैया को दुलारा ।
 घर की शोभा बहू बन पति के चरणा ओर निहारा ॥
 करी आरती मंगल टीका युद्धा हित तलवार धमा दी ।
 अपने सत के कारण हमने जौहर की ज्वाला सुलगा दी ॥
 देवी श्री परमाय की देवी अमर नाइटिंगेल हो गई ।
 शांति देविमा मदर टेरेसा आल्वा मिरडेल हो गई ॥
 विज्ञान चिकित्सा हेतु नाम हुआ भाबेले आरोल का ।
 इन्द्रा हुई गह्वीद खेल में नाम निरूपमा माकड का ॥
 हाथ पसारे तुम्ह निहारे त्यागी अपने स्वाय को ।
 निता हित कुछ नहीं मागती अपनालो परमाय को ॥
 तुम मानव हो इसी लिये बस मानवता की भीख मागती ।
 चक्काचोंष परित्याग करा बस हमता अपनी लीक मागती ॥
 जला जला कर गला दबा कर मत भारो कुछ त्याग मागलो ।
 कदम भिलाकर साथ तुम्हारे 'अपनापन' हम स न मागलो ॥

नहीं दया से जा मानाग
 यह धरती कगल बनेगी ।
 प्रिय सम्वाधन की तरसाग
 चिगारी जब ज्वाल बनेगी ॥

नया ढाचा

सुले घाम तस्करी चल रही
 मा बहिनो की लुटती लाज ।
 यह भारत क्या वही है भारत
 जो था ऋषि मुनियों का ताज ॥
 हुई चेतना सूय बुद्धिया
 सोये क्या मनु की सतान ?
 एक द्रोपदी के कारण ही
 रगा गया पुरु क्षेत्र महान ।
 बाल्मिकि ने भूगर्भा हिन
 रचा दिया मानस का गान ।
 बडी पुरानी थोथी लगनी
 सम्भवत किवदन्ती लगनी ।
 बड पुराणों की ये बातें—
 पर तुम पर ना ह सती लगनी ॥
 तुम बैचानिज युग निर्माता
 तुमको पश्वी नई चाहिये ।
 भासमान भी सषा गना है
 तुमको नया नितान चाहिये ॥
 बडा पुराना अपना ढाचा
 इसका जाड तोड कर डालो
 तोड प्रवृत्ति के नियम अभाग
 एक नया मानव गड डालो ॥
 सिर पर पैर, चले हाथा स,
 मुह स सुने कान से देखे,
 आख श्वास का वाम कर फिर
 नाक दनादन अमृत धोले ।
 कल्पित आखा से देखो
 (उस) मानव को स्वीकार करोगे ?
 नही जूझना सरल प्रवृत्ति से
 अत 'वही' स्वीकार कगोगे ॥

निक्ले तन से प्राण और
 काया फिर करती काम रहे
 सम्भवत यह हो सकता—
 बिन हड्डी के चाम रहे ॥
 कैसी करी विसमति पैदा
 घर की वज्जत बाहर बेची
 पशुवय भूत चटा निर ऊपर
 बाजारो श्री कोठे तैची ॥
 जिस्म बेर कर छा जाते हो
 पाठे पर नगी नचवागे
 बितनी लम्बी भूल तुम्हागे
 बाग ! इवग का गज बनवाते ?
 इस घर की भगिनी या दुहिता
 उस घर वँटी गिद्ध निगाह
 नम गह जाते हो गव वृद्ध
 सेकर निक्ले ठ ही घाहें ॥
 कारण पूछ गया तो भावा
 दयागे मन के दयाग म,
 बितनी सी निबन्धन स्वार्गे
 पहिचानाग बिन तपण व ॥
 घपना मन का मन और
 घपनी बमजारी का गिबार
 घपना बमार वृद्ध बन जाती
 वृद्ध तत्त्वा व मन का बिचार ॥

×

चमक-धमक

इस समाज के सम्य जगल मे
 बैठा बाल कु डली कसकर ।
 जिस पर भी फुफकार पडे
 वह गरीर उठता है मरकर ॥
 सदियों से मुनती आई हू
 व्याज मूल से प्यारा होना ।
 बहुयें तो जलती आई हैं
 अब तो साथ म जनता पोता ॥
 मजु राधा, हरमीत, सुनीता
 राजकुमारी निज जलती है ।
 मार जला देने के पीछे
 कौन पिशाच प्रवृत्ति पलती है ? ॥
 जितना ऊचा शिखर उन्नति का
 उतनी ही ऊची आगयें ।
 जादू के चिराग से सब बुद्ध
 पा लेने की आशायें ॥
 लगी पडोसी से भी होड है
 कौन होड म आग निकले ?
 सुविधाओं की दौड भाग म
 कौन दौड मे आगे निकले ? ॥
 कमहीनता औ आलम ने
 घुस पंठी गरीर मे कर ली ।

चमक धमक भी चवाचौध ने
 निल निमाम से बुद्धि हर ती ॥
 भौतिक सुख भी भोग तृप्ति को
 य सुदर हृषियार पा गये ।
 वेटा बहू भी दहेज म
 मानो सुख समार पा गये ॥
 कभी नकद कभी स्क्रूटर
 और कभी ये कार पा गये ।
 फिज टेनीविजन वीडियो
 कभी बी० सी० आर० पा गये ।
 नही कटीनी इहे गवारा
 भूखा को गव तुरन्त चाहिये ।
 बनी वेटी मडक पे होगी
 इनकी तो सब कडक चाहिये ॥
 ये दहेज के लोभी इनकी
 दानवना का हाल न पूछो ।
 कम दहेज भे विला हुई
 डोली की कोई चाल न पूछो ॥
 चदा भी बिटिया का मुख
 वाग्द भी तुम देख सकोगे ?
 मार जला डालेग कब य
 इह न तुम भी रोव सकोगे ॥
 इनके बेटे सुख के साधन
 लाख लाख के बैंक बने हैं ।
 खाती घर भरने की खातिर
 खाली घर के बैंक बने हैं ॥
 इस भ्रष्टाचारी दानव को

सत्य हम ही करना होगा ।
 इन दहेज नास्तुप भूगा वा
 बहिष्कार भी करना होगा ॥
 जा मानव हा धीर जिह हा
 मानवता पर अधिकार ।
 ने नो ये गीणध उही को
 क्या करने वा ही अधिकार ॥
 धर्मरूपन वा भूत स्वय
 मर पर म उतारना हागा ।
 हो गरीब मजदूर भन
 मान्यता वा सवारना होगा ॥
 हम चमक घमक की कँचुनी वा
 जरा तक उतार ता पासाग ।
 क्या बटे क्या बटो वाले
 ये रण उदार ना पाश्रोग ॥

7 11 85

आकाशवाणी स प्रसारित



(एक कुठित स्त्री की मूक वेदना)

मूक-वेदना

ठहर गई मारी गति विधिया
इरासा में है भभावान ।
गूँय गूँय चद्र और घ घेरा
किसकी कटन है गतिमान ? ॥
गति नम स्वयं सज मूक ही गये
मरिया म है खोप छत्र ।
नर गया नृपान प्राण म
अधर हा चुके कय र र ॥
ठहरा इया घाव का पानी
अनजान कव लुटव गया ?
अपनक रहा ताकती इतप्रभ
वह पल था जा ठहर गया ॥
वह पीडा त्रा र्थ कठ म
स्वर का भी अवरोध बन गई ।
मैं ह मूक वेदना स्नहित
नारी मन का त्रास बन गई ॥
गीता गकुलता सम्यती
मर ही पयाव बन है ।
बाबा दुर्गा जननी ममता
र मरिता क भजन है ॥
इतनी गति गमाहित मुझ म
फिर नी अरता मैं कन्तापी ।
गमी गद म मैं अभिगावित
बाबु अाधिया क फिर घाई ॥

7 11 85 धारागवाणा म प्रकाशित

एक सत (वेश्या की पुकार भाई के नाम)

पान राधिया का रत्न ३ चीत्र पुरा है प्राणा ।

मर लिये गुना ना लाया य मन भावा मावन ॥

रेगम क य उजाले प्राण विमवे कर म वार्धु ?

मेरा स्वप्न हुआ ना पुरा कीन माधना साधु ?

प्रांगन के उस पार गूडा है दुनिया की नजरा का भाउ ।

मरी राखी के नायक ना उमकी हुई बला ॥

वार-वार अनुरोध कर रहा बाध ४ वहना राखी ।

ममक रत्ना तर धनम को तेरी पत ना राखी ॥

बहने का ना खास बहिन ४

पर मैं कैसे प्राण हो गई ।

नर रहने मरी अस्मन

कम हा । नीलाम हा गई ? ॥

गब कहत ४ तु भा ४ है

मन वर माने मरा ।

भूख पट की खातिर तुन

सौल किया है मरा ॥

मर भी अरमान बहुत ये

मैं भी घर का गामा रनती ।

लानत तुम पर धा हनभागे

मैं खुद का भी धावा समझी ॥

तरे जैसा कम हीन ४

कोई बहिन ना चाहगी ।

मावन बीत बिन भाई के

कभी न कोई रोयेगी ॥

तरे जैसे गन्ध माग ते
 पुतला ते इतिहास दिया है ।
 तारा क्या इतिहास प्रगता ?
 तू तो बस उपहास था है ॥
 मी ऐसा म हुय वीर व
 जग की इन्होंने रक्षा पाई ।
 एक वीर तू भी मरा है
 राज इहित की वचा न पाई ॥
 यह विस्मिल का देश यही पर
 ताल वान श्री पान न्ये है ।
 विश्व प्राति हिन गौतम-गांधी
 यहा जवाहर राज दूये है ॥
 देश की इहिना की रक्षा हिन
 भगत न चूमा फामीफता ।
 तन बल्याग त्तु जमा था
 यहा एक परागी बदा ॥
 तान इहादुर यही था जमा
 छोटी सी काया नेकर ।
 देख मवा ना इन्होंने विधवा
 बना गया मन इकर ॥
 वीर सुभाष यही जमा था
 तय जय हिन का नारा ।
 मा इहिना की लज्जा क हिन
 दाघ प जीवन वारा ॥

२ स विगत नाम गिनाऊ
 नही पाव है वाना ।
 हाय ! हमारी खातिर दे गय
 वीर जवा बुधानी ॥
 मुह बोली थी ग्रहिन द्रोपदी
 कृप्या न लाज बचाई ।
 तुझस गैर जाति का अच्छा
 बमवती का भाइ ॥
 परिस्थितिया बग दर हुद थी
 फूट फूट कर रोया ।
 मुझ माफ करना श्री-इलाही
 दामन पाव न थाया ।
 एक खरा नू मरा महादर
 जि दा मरा जनाजा ।
 अर मद हाना न कही नू
 बहतर कहीं जनाना ॥
 प्रण मरा ह बाधू राखी
 मिले जा कोई भाइ ।
 मुझे उबार अर नरक स
 तूड वही बलाइ ॥

11983

आकाशवाणी स प्रसारित

वेश्या की पुकार

नहीं घगा म मुझे निहारा द दा मुझका प्यार ।
 मैं भी सोभा तना ताह प्यारा है घर-बार ॥
 इस दुनिया म कब आई हूँ नहीं मुझे है जान ।
 कब स हुई गिबार हयश की इगम भी अनजान ॥
 मरा भी नारी मन दुखन यदा तदा राया है ।
 पा न सखी गी वह तापद अब नव जा याया है ॥
 कहत हूँ उदात्त मुझे उनम मरे चण गवान ।
 तुम जैसे न हूये हात क्या हाता यह अपना जान ॥
 मैं भी मुता रिमी तना की दूरा भाग्य मितारा ।
 वगी उम्र व नाव वण घु घर स प्यार हमारा ॥
 जना गन की रानी मैं भा जशन मनाये जात ।
 तही उम्र का काई तवाजा पिता-पुत्र स आत ॥
 हुआ एक दिन बडा हादसा मिना अभय का दान ।
 मरक्षण पाया था जिसका वह था एक जवान ॥
 मीके की तलाश थी मुझका भाग यद् म इक दिन ।
 महिला रक्षा हित जो बन थ नारी निकेतन उस दिन ॥
 आख सुन गई उस दिन जाना चकला व ये ठेकेदार ।
 गुनू यही स जिस्म फरागी का करत हूँ व्यापार ॥
 और आमा चटक गई फिर फूट फूट कर रात ।
 पता चल गया गिर हुआ का हुआ न करता काइ ।
 और उसी दिन जल उठी मरी प्रतिशाधी जवाला ।
 इस समाज स लड मरन का प्रण मने कर डाला ॥

महल भापडी म मैंन फव नही बुछ पाया ।
 अबलापन का पान हुआ अपना मन भरमाया ॥
 अब भी है एकान और तम मुझको बडे दुलार ।
 मारा की मुस्बान, स्वय के घासू मुझको प्यार ॥
 ठेकेदारा ओ समाज के कोई मुझे उवारा ।
 स्तहमित्त य आचल मरा कोई मुझे दुलारा ॥
 दूद हृदय का जत्र छिन्ता है हाहाकार आत्मा करती ।
 गृहिणी भगिनी जो बन पानी सात हृदय की जवाना होती ॥

राखिया

वीन पडा राखिया बहती त भाई का यादा का ।
 भाज नहीं वह हाथ दीखते जा बाध इन धागा का ॥1॥
 नेह प्रेम व हम प्रतीन पर बरत क्या है भगवा लोग ।
 गमिदा हमका करते है, खुद बरत है रगवा लाग ॥2॥
 बहा गय व लाग बाधकर रक्षा का प्रण बरत थ ।
 भान वान हित दग गान हित हसत हसन मरत व ॥3॥
 आज दुदाइ मरी दरर सनी भ्रष्टाचारा की ।
 नाना-वाना मरी इज्जत होठ लगी व्यभिचारा का ॥4॥
 जागो-जागो भव ता जागा आका मरी कामत का ।
 ए राखा हू रगा करती में ह ममपित जीवट का ॥5॥



व अथ व स्वाधीनता व अथ क्या मुमन लिय ।
 दृश्य वधन काट कर अस्थ वधन भर दिय ॥
 वी लालसा और कामना, उत्थान की निजमान की ।
 मनि गगज पर दिया और प्राण शोषित कर दिये ॥
 कथ स कथा भिडाया हाथ म हल ले लिया ।
 फाइला व बोझ का हमन सरलतम कर दिया ॥
 विज्ञान युग म पर धर यथा स कर ली दोस्ती ।
 स्वय दाभिल बन गय तुम की सरलसम कर दिया ॥
 अपना मर्यादा रखी हमस न वो लाधी गई ।
 वह तुम्हारे मोमा गज स स्वाथ तव नापी गई ॥
 मा, वहिन, परिणीता, सुता कतव्य का ही बाध है ।
 और हम अपमान की ही आग म डाली गई ॥

लोक गीतो पर आधारित गीत

“उन सभी महिलाओं का दद जा असम, पजाब या अय
 नाहित्यिक पहलुओं का शिकार बनी । नारी आखिर नारी है वह
 बही की हो उसका हृदय स्पर्शि मम तो एव सा ही होता है । कोई
 त्योहार हो पव हो वह यही चाहती है उसका परिवार हसी खुशी स
 त्योहारा पवों मे शामिल हो यदि विधाना वाम हाता है तो उसका
 अतमन रा उठता है ।



सावन

बीतो मूना गावा मूनी राती मरी

एसा मनहूस गावन न आवै मगी ।

[1]

याद आवै जो एरु का गावन
मूजी कितवारी घर देहरी भागन
आजु वरसै जा नह ता महा भर ।
मगी होड वीनु अनि वरसै सगी ।
एसा मनहूस सावन न आव सगी ॥

[2]

फूल पून जहा रह बागान हर
आजु होनहि सगी राजु मुनगान वर
जहा भेन हर और घर व भर
उहा मरघट वीआ चिवारै राती ।
एसा मनहूस सावन न आवै सगी ॥

[3]

माग पाछि गय चुरिया फोरि गय,
दूध पियति गय, बूटे वारे गय
रसिया वधवाय वीरनु एस गय,
वाट जोहू कि कहु से तो आवै सखी ।
एसा मनहूस सावन न आवै सखी ॥

[4]

हाय वज्जुर भई हम धरती सा,
तनु जनु धनु सबु गयो रहि ठगी सी
जिनगी रहि रहि हमहि कचाटन लगी
वालु दूरि लडो हि चिढाव सखी ।
एसा मनहूस सावन न आवै सखी ॥

दिवारी (दीपावली)

इहा मन को दिया भिन्नमिलान लगा
भव कैसी दिवारी मनावै हम ॥

[1]

सार मन ब चौवार अघरे पर,
भव दुमार का दिया कैसे जरे
हाय ममता अभागिन ठि गई,
अबु कौन सा तेल जरावै हम ।
भव कैसी दिवारी मनावै हम ॥

[2]

उजियारा नगर अर गहर भर
गाव पूरो अघरा उसात भरै,
कालु पिटरील आय के ऐसा बहा,
भव नैनन नीर बहावै हम ।
भव कैसी दीवारी मनावै हम ॥

[3]

बहु भूखन भातँ सिकुडती ना
भौ गरीबी हम बुढीता ना,
हाय सिल ना अघ इन पटन से,
कैस भूख से पोछो छुडाव हम ।
अब कैसी दीवारी मनावै हम ॥



एव कोने लडी भीजाई रोव
 बहु ठाडा दवर सिसवी भर
 बोई घाट जाय ठाची प्रीतम की
 बहु जीजा की सारी चिक्वारी भर,
 बोई सरहज रोव ननदाइन का
 रग वुरग भय गय मुठिया मलै
 बहु बूढ़ो वाप बहु मैमा रोव
 एमी ममना की होरी न जरई बबहु ।
 पर एमी तो होरो न लेखी बबहु ॥

×

होरी (होली)

हारा बहुतक दति चुबी अब तब
पर एमी तो होरी ना देगी बबहु ॥

(1)

ढाल बम के प्रजे चग नठियन क
गोली दन-दन चली ठाड मजीरन क
गीत वारे हाट अर मिगकी भरै
पिचकारी वार हाथ कटि क गिरै
रगु दूसरा न पाई जिवाइ परै
रगतु एकहि पर मय कटि कटि मर
बहु मन जरै खलिहान जर
हाय एसी त हारी न जरइ बबहु ।
एसी ता हारी ना दखा बबहु ॥

(2)

एक थरिया म खात सा बरी भय,
सग धमारि मचाय सा गरि भय
पिचकारिन रग बिखेरत जा,
आजु घाय स गाली मारत वा,
गरि कौन है, कौन है अपना, इहा,
खुली आखिन अघ हुई गये इहा,
हाथ अनो हि घर ती बिराना लग
एसी नीति अनोनि न दखी बबहु ।
ऐसी ता होरी ना देखी बबहु ॥

(28)

ग्य कौने खडी भीजाई राव
 कह ठाडो दरर सिसरी भरै
 कोई बाट जोव ठाडी प्रीनम की,
 बहु जीजा की सारी चिक्कारी भरै,
 कोई सरहज रोम तनदोइन को
 रग कुरग भये सत्र मुठिया मलै
 बहु बड़ो त्राप बहु भैया रोव
 एमी ममता की होगी न जरई कबहु ।
 पर एमी तो होरी न देखी कबहु ॥

×

फाग

बस गेलू फाग हाथ में बँस गतू फाग रे ।
हरियाली का राज जहाँ था हूप लाल बागान रे ॥
बँस गेलू --- ---

बिन घर आगन वहिना भटके तू रती है मया
सूनी गोदी लिय भटवती ताल को ढंके मया
सूनी भागें खोज रही हैं उजडा हुआ सुहाग रे
बचल बालायें हिरनी सी भरती जहा उछाल रे
ग्राम बधू की पीठ टोकरी हरे भरे बागान र
गय केसरी जहा महवती आनी बहा सडाघ र
मन मोह्व से पय हिलात पछी गान गान रे
भरना की स्वर लहरी पर भरे अनोखी तान र,
गिद्ध बहा पर नोच रहे ह आज गवा से मास रे
घर आगत गलिमारे मून मून सब बाजार र
बुभी-बुभी आखो से देखू उजडा हुआ ससार रे
कहा गई वह नीति पूरवी कहा गया गणराज रे
रग बिरगी इन्द्र धनुष सी जहा चूनरिया घानी
बतप-बलप कर मर आदमी काई न देता पानी
अमबा के बिरवा म अचानक उन भाय कटास रे—

—

बदरिया (वर्षा-ऋतु)

भुकि-भुकि जाय बदरिया बिना बरसे ।
रवि रवि जाय बदरिया बिना बरसे ॥
घरनी पियासी पियासो मन तरसे ।
भुकि भुकि जाय बदरिया बिना बरम ॥

पपिहा स्वाति की घाणा लगाय
कुहवे मोरा कि बदरा न छाये,
हरियाली घरती की गोदी को तरसे ।
भुकि भुकि जाये बदरिया बिना बरसे ॥

जरि गई लता पीध सब जरि गई
बिन पतभर सब पियरी परि गई
बरसे मुरजु सब महा को तरसे ।
भुकि-भुकि जाये बदरिया बिना बरसे ॥

ध्रतिया जो घरती की फटि जहे
लावणी बजरी फिरि को जैह
मुरखु-मुरखु रगु बहु दिगि दरसे ।
भुकि भुकि जाये बदरिया बिना बरसे ॥

बौन सो काली भाष धरा जनम,
मेघदूत सो मदेगो भेज छा म,
बरसो इदर जो चाहा सब हरष ।
भुकि भुकि जाये बदरिया बिना बरम ॥

—

अहसास

[1]

नजदीक का अहसास ही इक गकून है
रिया की जनत ना बचन है ।
बया चाक जियर रखा है आपने—
नजरें इनायत तूँ दिन का गकून है ।
हगतो हुई दुनिया तनी भी साथ बय तक—
गिरते जो तथेनी वे वा आसू बयन ३ ॥

(2)

शयनमी मो नग रही ह हर निगाह
बोलिये कौन मा गीत य तब मुनगुनाय
जिस्म है गोया कि दिन के हाथा का खिलौना
बोलिये अपना पमाना गैर को कैसे मुनाये ॥
गमजदा बेनूर हर चेहगा नजर आने लगा
गस की हर गस से अजनबी है निगाह ॥
ड्यते मूरज मा न रौनक हुई है जिगी
जद होना आसमा द रहा है गदार्ये ॥
चिथडे चिथडे जिगी सीते रहे ता-उम्र हम
पोर्ये जग्मी ह्ये पेबद फिर भी लग न पाये ॥

“आवागजाही से प्रसारित”

1184



मूनी मून मटफिने >

बहकी—बहकी है निवाह ।

भी है बेगव मगर

किस तरह उत्पन्न निवाह ?

चश्म दीदाई के खातिर मिल रहा है हर गला
के हिचक, बेचोफ मिलत डडती उनको निगाहें ॥

जस जहा की भीड म मोस्त भी दुश्मन भी हैं
गैरियत म प्यार राट दूढती उसको निगाह ॥

वा रहा है कौन हमम मजहूरी नफरत के बीज
खैर गवाही कौन जसा दलती उसको निगाह ॥

एक लम्हा ही बहुत है चाक दिन के वास्त
उत्फने मजमून द दे दूढती उसका निगाह ॥

आज अपने अजुमन को ग्या गये दीवारो दर
सब्ज गुलशन को जा रये दूढती उसको निगाह ॥

हर बगर इक कौम का हर बगर हिन्दोस्तानी
रसम उत्पन्न को निवाहे दूढती उसको निगाह ॥

वाट टुकडा म न पाये द दती उसको निगाहें

आकाशवाणी से प्रसारित

1184

रुद त्त म जहाा भर वा वसाये रणिये ।
 प्राग नम हा ता मुकाये रणिये ॥
 ३ नही पाय गर नसव्युर तो गम र करिये ।
 प्राप अपना ही तसव्युर तो वनाय रणिये ॥
 दिन का शमन ही वही राग न गर दे कोई ।
 अपने गोला को हाया मे दबाये रणिये ॥
 उग्र दे पापे तो तहा न समभना खुद की ।
 चन्द सप्तो वा मपर साथ निवाहे रणिये ॥
 जा भी अजाम हो वो देता जायेगा ।
 नेमते गैरा की मर पे उठाय रणिये ॥

×

ए खुदा तेरे जहां मे बन्ली हुई तस्वीर क्या ?
 दुश्मने जाना यत्नती त्नेस्त की तदवीर क्या ?
 जा दुआआ के लिय हाथ उठे ध कभी
 आज उनके हाथ मे कातिले शमशीर क्या ?
 खून का रंग मुख सवका क्या बनाया ए खुदा
 बाह गुरु के नाम पर मिटन लगी तदवीर क्या ?
 सूली पर लटका मसीहा गैर की कपो खर भागे
 क्या फरेवी जस्मते रहोवदल जमीर क्या ?
 मदिरा की घटिया के अदाज भी बदले हुये
 दुनिया के मालिक तेरी मिटने लगी तस्वीर क्या ?

“गजल से”

ए जान गजन म्हान गजन
 तू कहा-कहा गई नही
 बादशाहत से फकीरी अदाज म गई गइ ॥

दिल का दद बनवे तू होठा पे आ छान लगी,
 घुघर्रा की छुमछनन वाठा का तू सजाने लगी
 जिन्दगी के फलसफे पर बनती रही दिगडनी रही
 ए जाने गजन -- --

वदनसीवी सः आह बही बनी तू जुस्तजू ।
 मीर मामिन लाग दद आजरू व आरजू ॥
 चाव दिल नरव बही नन्तर चुभोती गई—
 ए जाने गजन

सरफरांगी की तमझाम्रा म वाई गा गया
 कौमी उत्पत वास्त लहराके कोई छा गया
 जिस नजर से देम तुम्हे तू उमी की हो गई—
 ए जान गजल

वः वमर मे जफर मागता तुभम दुआ
 तीन गज के वास्ते दाता भी याचक हुआ ।
 किमी की तू दिलम्बा किसी प बहर बहाती रही
 ए जान गजल म्हान गजन तू बः बः गई नही ॥



गजल

जो उतर गई हतक म उस यू न आप मथिय ।
जो गुजर चुवा जमाना जिंदा न आप करिय ॥

दागा की बैसकर ही जहमा की याद ताजा ।
पदों म हां गया जो बंपदा यू न बरिये ॥

छाला के फूटन की जब याद ही नहीं है ।
जलने की याद करके खुद को न यू ही छलिये ॥

अब वक्त की इजाजत जब मुस्कराय थाडा ।
इस क्षीण सी हसी का हाथा से यू न ठकिये ॥

आवागवाणी से प्रसारित

(2)

मर जहा स आपका जहान बहुत दूर है ।
चाद तारे पास पर आसमा तो दूर है ॥

जिंदगी की हर चुशी हाठा प आ सिमट गई ।
खिलपिलाहट सपन पर मुस्कुराहट दूर है ॥

दटती हर लहर का आगोश किनारा बना ।
डूबती किशती तहर म तो किनारा दूर है ॥

मजिले मकसूद बुछ खूबी रही इस कदर ।
रास्त ह हमसफर पर हमसफर महत्तम है ॥

15 11 84 आवागवाणी से प्रसारित



जग कैसा है ?

हवा घुट-घुट क कहती है जीने का ढग कैसा है
सिमटता सूर्य या बोले जहा का रग कैसा है ?

चल थ चादनी की आस म नव साम पाने का
व्यग था तारावलिया का धरा का ढग कैसा है ?

हरे पत्ते हरी शाखा जडें ह खाखली लेकिन
उसी पर नीड अपना है विधाता व्यग कैसा है ?

आज ता घर चूह न भरा घर फव ही टाला
उदर म नित मुलगती है जलन का ढग कसा है ?

यहा अपना की आखा मे नही विश्वास की चाहत
वहा विश्वास टकराये मिलन का ढग कसा है ?

जहा हैं हम खडे वह भी धरा ता एक छलावा है
छलावा मोत तव खुद से स्वय का जग कैसा है ?

अमावस दिन दहाडे ही उतर आई धरा पर है
तेज के पुज सूरज का पीत ये रग कैसा है ?

अर ठहरो अभी देखो जरा वहृपिय रुख का
हवा हा मुक्त पूछेगी हमारा सग कैसा है ?

आवागवाणी से प्रसारित 3 5 85



प्रेरणा

अगर प्रेरणा दो मुझका तो मैं दे दू विश्वास हृदय का
गति मरे पावा मे लेकिन,
अनजान पथ की मैं राही ।
भटक पथ म मैं जाऊगी--
अगर तुम्हारी पीर कराही ॥

अगर रदन का रूप न दा मैं द दू मधु हास हृदय का ।

अगर प्रेरणा

मने निश्चल चलना सीसा
छलना तुमन मुझे मिखाया
कहना मान चली जब पथ पर-
दोषी तुमन मुझे बताया ।

कितना आबल फैलाती मैं दे न सब तुम हास हृदय का ।

अगर प्रेरणा

तेरे गोता पर म भूमी
कितनी तेर द्वारे भटकी,
तेर अपमाना न लेकिन-
भजिल पर ला मुझका पटकी ।

दिया नही जाने म बुद्ध भी किन्तु मिला उपहास हृदय का ।

अगर प्रेरणा दो मुझको तो मैं दे दू विश्वास हृदय का ।

×

प्रश्न

वालो बच तक और छनाग ?

मुनी अभी तक सीमा है हर रात का
पतभट म भरत दरो ह पात भी
नय पल्लव उगत दमे है ठठ पर—
पाहन उर ने कभी न काई माग की
उर कलिका तो कुसुम नही बन पाई है—

कटक गहन अगर उग प्राय
बोना कम दह चुनाग ?
वाला बच तक और छनोगे ?

अंतर का नारी न जब करवट बदली
छा गई तभी हाहाकारा की बदली,
मेरा स्व कभी न जीता और जगा—
म भू का कण हू और गगन की तुम बदली
सूखी अनिला मे अगर अनल लग जायगी—

सोच सके क्या नीर मघ बन पायाग
वालो बच तक और छनोगे ?



पहरे

भपने हाथा खादे गड्ढे भाज और भी हैं गहरे ।
जीविन साशा पर लगत हैं दुनिया के तमाम पहरे ॥

टाते-ढाते लाश स्वय की,
कमर भुव गई उम्र की,
जिन्दा शव कथा पर रसा—
गिला न कोई उच्च की

धीत थप लगे उमादित दिवस लग सागर गहरे ।
जीवित साशा पर रहत हैं दुनिया के तमाम पहरे ॥

साचा वो ता थपकी देकर
कब का मन दिया सुला,
अप्रत्याशित वो अतीत पर—
कब देता है मुझे रुला ?

गोले हग फिर भारी मन पर बोझिन पलकें कब ठहरें ?
जीवित साशा पर लगते हैं दुनिया के तमाम पहरे ॥



आस

मुक्त हसी तब भीड़ मिली है मुस्काना तब आस पास ।
नीर दृगो से लगा जो भरने कोई न दीखा कोसा पास ॥

प्यार और वात्सल्य मे देखा
स्नेह और मातृत्व मे देखा,
राग और अनुराग मे देखा,
विरह वी जलती घाग मे देखा,
नैना का शकत ही देखा,
पर सबको अनचीहा देखा ।

पर पयोद को कभी न पाया तपती हुई रेत के पास ।
नीर दृगो से लगा जो भरने कोई न दीखा कोसा पास ॥

घर के लोग लग परदेगी
दर ओ दीवार लगी विदेशी,
मुह चिढाती हसी उडाती,
निकली पास स कभी उदासी
जीवन ता जीवन ही था,
मौत भी भागी पीठ दिखाती ।

दा राह वी पगडडा पर मुट्टी भोचें मन वी आस ।
नीर दृगो से लगा जो भरने कोई न दीखा कोसा पास ॥

रेखा

समय की बढ़ती रेखाओं का गहरी कर लू—

धनजाने कब कौन कहा से मिट जाये ॥

य रेखायें सिफ प्रश्न बन सचिंत हा यदि—

साचू उतार कौन कहा से पायेगा ?

जीवन क्रम की गति का किसको बोध है

तार मध्य से टूट अगर ये जायेगा ?

सारे उत्तर एक ही साथ दूड लू

धनजाने कब प्रश्न कहा से उठ जाये ?

समय की ~

प्रश्न चिह्न अस्तित्व हमारे उत्तर स्वय सफेदी है ।

कागज ही दर्पण मानव का, दर्पण स्वय फरेवी है ।

दोष सभी के साथ समय का गुण अवगुण है—

किसको है कब ज्ञान, कहा पैर ये रक् जाये ?

समय की बढ़ती रेखाओं को गहरी कर लू

धनजाने कब कौन कहा से मिट जाये ॥



आस

मुक्त हसी तब भीड़ मिली है मुस्का
नीर दगो से लगा जो भरने को

प्यार और वात्सल्य
स्नेह और मातृत्व
राग और अनुराग
विरह की जलती श
नैना का शक्त
पर सबको धनची

पर पयोद को कभी न पाया
नीर दूगा से लगा जो भरने का

घर के लोग न
दर ओ दीवार त
मुह चिढ़ाती श
निकली पास स
जीवन ता जी
मौत भी भागी प

दा राह की पगडंडी पर मु
नीर दगो से लगा जो भरने

शाप

हुई विषय गया प्रतनी मस्तिषा
दूरी क्या अभिगाप हा गई ?
पद तिहा तक नन पलक जो
सोजी अपने आप हा गई ॥

दृष्टि पात तक गूय-गूय है
घोर गहन उर का सूतापन ।
होटा की मुस्वान भमागी
कभी छुयेगी मन का प्रागन ॥

निराश्रिता मो राट जाहती
मीप-त्रिदु सी आत हा गई ।
दूरी क्या अभिगाप हो गई ? ॥

मूरज निक्ला गलियारे तक,
अपना हर दिन घोर अभावस ।
गीतलता पूनम की छत तक,
आगन मरा तपना पावस ॥

वारहो मास झडी सावन की गरी में बरसात हो गई
दूरी क्यों अभिगाप हा गई ?



मेरे गीत

अनजान थी अनचाहे ही आज तो गया मेरा मन
कल तक जो अनदेखे थे उनम रसा अपनापन
नाज मुझे था अपने मन पर फिर भी चिह्न क उठा गौरव्या ।
मूत-रूप सौंदर्य भावनी उड मत जाना वन पुरबंद्या ॥
भावुक मन मयूर क्या नाचा गीत बने होठा के साथी ।
आया से अनछुई नीद है ज्वलित रह दीपक की बानी ॥
गहर नीले भील दगा से नहा गया ये कोरा तन ।
कल तक जा " " " " ॥

प्रकृति परी मैंने देखी थी देखा था सौंदर्य धरा का ।
नील मगन, शशि गए देखे के छु न सका रवि तज जरा सा ॥
दिवा स्वप्न औ प्रेम कहानी सीमित थी उपहासा तक ।
आज मुझे चिर परिचित लगते मन प्रकृति मधु-हासो तक ॥
अनुपम मजुल रूप तुम्हारा, मत्र मुग्ध सा मरा मन ।
कल तक जो अनदेखे थे उनम देखा अपनापन ॥

×

शाप

हुई किवरा क्या इतनी अखिया
दूरी क्या अभिशाप हा गई ?
पर चिन्हा तक नत पलकें जा
खोजी अपने आप हो गई ॥

दृष्टि पान तक गूँथ-गूँथ है
ओर गहन उर का सूनापन ।
हीठा की मुस्कान अभागी
कभी छुयेगी मन का आगन ॥

निराश्रिता सी वाट जोहती
मीप-विन्दु सी आस हो गई ।
दूरी क्या अभिशाप हा गई ? ॥

सूरज निकला गलियारे तक
अपना हर दिन घोर अभावस ।
शीतलता पूनम की छत तक,
आगन मेरा तपना पावस ॥

बारहो मास भडी सावन की एसी में वरसात हो गई
दूरी क्या अभिशाप हो गई ?



मन

मेरे अनछुये कुंवारे गीता का
आखिर तुमने सुर दे डाला ।

इस मधुर-सुलभ उर कलिका को
आखिर तुमने छू ही डाला ॥

बरसो से सजोया था जिसको-
वह बिखर गया इत ही पल में,
अपनी सीमा को लाघ सबू --
इतना साहस दे ही डाला ॥1॥

विस्तार कहा तट छू लेगा-
य मीन खडी ही देख सकी
बघो रह गई खाली अजुली-
और दूर किनारा कर डाला ॥2॥

मेरा अभिन मन दिनभिन
ऐसा उलभा रह गई सन
मैं सरल सुलभ मुलभाती रही
ऐसी उलभन में भर डाला ॥3॥

मेरा प्रतिबिम्ब देख दपण-
रोया करता है सिसक सिसक
गोले दृग देख नहीं पाई
इसने तो सागर भर डाला ॥4॥

मेरे अनछुये अधरे गीतो को
आखिर तुमने सुर दे डाला ॥
इस मधुर सुलभ उर कलिका को
आखिर तुमने छू ही डाला ॥



एक एक कर बवार घन फिर

वन धासा मे छाये वादल ।

जीवट मन म उयल पुयल फिर,

सतही जीवन मे क्या हलचल ?

घ जुरी भर पानी लेकर रोया त्या नीलाभ नयन

तपित मरुधरा को पिपास ले

बू द-बू द जल ताये वादल ।

गुप्क भक्षु मे छाये वादल ॥

तुम निहसीम व्योम के मायी घरनी की सीमा कव जानी

ग्रहम् धरा के मग न चटके

हो वितने अभिमानी वादल ।

मान करें क्या गुमानी वादल ॥

शायद तुम अनभिन्न अभी हा रानी की ऋठा मचली से

स्वाभिमानीनी कोप करेगी

तुम हागे मनुहारी वादल ।

मत हो पानी पानी वादल ॥

ऋठा हठी आख मिचौली अपने घर तक सीमित रखो

हसे लोग ये देख तमागा

लज्जा नही शवानी वादल ।

तुम बरसाओ पानी वादल ॥



सुधि

महका जब गाव का चदन

मेरी सुधियो न जम लिया ।

कुछ अपने बनकर बिखर गये,

कुछ आसू बनकर निकल गये,

कुछ वने अघबने चिन्तित से—

कुछ बाल-सुलभ बन विहस गये ।

खेतो-खेतो की मेडा पर

कुछ ने वासो का रूप लिया ।

महका जब गाव का चदन

मेरी सुधिया न जम लिया ॥

बचपन पर लडहर ठहर गया

यीवन का द्वार ठहर गया,

ब्रीडा के द्वारे उगी घास—

जो अपना था वह बिखर गया ।

कुछ नहीं पूछती सखी कोयल

बगिया न जीवन बदल लिया ।

महका जब गाव का चदन

मेरी सुधिया न जम लिया ॥



कृन्दन

आज उमंगों की दुनिया में फीका क्या है मरा मन ।
गीत वायु के भाँके में भी तपा जा रहा मेरा तन ॥

गीत मुझे मिन चुका और
मिन चुके आज है स्वर मार ।

भार पना इतना गीतों का
खुश न सके हँ हाँठ विचारे ॥

मन ही मन इतना गाया पर,
गानों को ना स्वर न पाई ।

नीट गये संग मुझ तक आकर
ने दे करके अलख दुहाड़ ॥

खड़ा धर कर मुख वैभव पर
गात नहीं है मन का कदम ।

गीत वायु के भाँके से भी
तपा जा रहा मरा तन ॥

स्वयं मुधाकर ने आकर
अपनी किरण मुधा बरसा दी ।

अग्गादय की आभा न आ
माग मेरी सिद्धरी कर दी ॥

तप्त दिवाकर ज्पण नहीं ये
किरण किरण आगीप भरी थी ।

सध्या मुम्बाई धीर में
मन्द मनय भी न घ भरी थी ॥

दोपक की लो धूँघट खोले
आँखी में ठाम सावजन घन ।

गीत वायु के भाँके से भी
तपा जा रहा मरा तन ॥



नौजवानों के नाम

गस्य श्यामला धरती नीचे
नील वितान विशाल है ।
आर मय म फहर रहा
य भारत राष्ट्र निगान है ॥

वह निशान जा हिम से ऊचा,
बलिदानों का ये प्रतीक है ।
वृद्धा बाल, युवा का प्रेरक
इमके गह्वर म अतीत ह ॥

वितनी भीम, जाति, धम सज
इमके नीचे एक बनी है ।
एक रग का खून उहा है
गौरव या अभिपक् बनी है ॥

वाकिल—मी स्वर नहरी म
राष्ट्र गीत मय गात ।
सिहनाद भा गला फाडकर
मुर म मुर है मिलात ॥

एकमेव हा जान इस तिन
मय अतीत टुहराने ।
आगे परचम पर ही ठहर
गौरवाचित हा जान ॥

नो हाता है यह उन्नम है
पर भविष्य उन्मय मम्हाता ।
आलम नाम उठा युववा
तुम सब अपना देग सम्हाता ।

आजादी का अर्थ नहा है
मार काट या बि हिंगा ।
धर्म का पूजन ही महान् है
मय का अपना अपना हिस्सा ॥

राजा का अर्थ नहीं है
 खूब वह बगाना म ।
 राजा की वा अर्थ नहीं है
 नाग उठ गुम्बारा म ॥

राजा की वा अर्थ नहीं है
 चिय ह्य बस नग तन पर ।
 राजा की वा अर्थ नहीं है—
 भूमे नग मरी तल्प कर ॥

राजा की वा अर्थ नहीं है
 अविचारी वन करवे नाचा ।
 राजा की वा अर्थ नहीं है—
 नम्बी चौड़ी भठी हावा ॥

राजा की का अर्थ दग की गुहाली है ।
 राजा की वा अर्थ धरोहर की गवानी है ॥

उठा जवाना मम फूट दो अर्थ पूजन का ।
 कमहीनता उठ क त्यागी नाता नहीं जनम का ॥
 स्वग धरा पर कंस उतरे
 अपनी भाषा रख सबोमि ।
 कमठ का साक्षी ईश्वर है,
 भाग्य नकीर त्त मकाग ॥

अन्त-अन्त कर गान्धला,
 गसी नीचे तुम्ही मिग टा ।
 स्वच्छ समाज का दपण बनकर
 राज नेग को तुम दिखलाता ॥

फिर ये पुण्य पनाका हागी—
 होग तुम असली अधिकारी ।
 बिन मत्त प माग मत करता—
 अधिकारा की ओ अधिकारी ॥

वागडोर

आज दश की वागडोर है युवा तुम्हार हाथा म ।
चिर प्रनीक्षित युग परिवतन ला दोगे क्या दाता मे ? ॥1॥

आगा और निवास लिय
भारत न तुम्ह पुकारा है ।
व्राति गाति हिन भारत भू न
तरी और निहारा है ॥2॥

क्षेत्रवाद ने जातिवाद न
धर्मों के आम्बर ने ।
मा का आचन लाज कर लिया
दया है नीताम्बर ने ॥3॥

चिन्ता रह है पश्चिम वाले
हवा पूरबी हुई विषैनी ।
पूद्र हिता व निय जना
कसे आम्बों की होनी ॥4॥

विश्रामा पर पिस्तीन उठे
ओ आगा पर उम की भाषा ।
रण ही भयव बन जाना
नैतिकता का कैसा भाँसा ? ॥5॥

लाज हुई गरमा की भाजा
पूद्र रही मन्न की राटी ।
गान गले जो मगडा करत
क्या पाटी भाद की वाणी ॥6॥

गुप्त यात्रायें चचायें
धमरीवा और फाम पत्तनी ।
गवित जहा महान हाता
गोण वाजो आत्र चिन्बनी ॥7॥

उन्नति की प्रतीक तबनीकी

काल नृत्य ऐसा करती है ।

निद्रा-मग्न मत्स्य ऐसा आलिंगित

पनघट को मरघट करती है ॥8॥

मंदिर मस्जिद, गुम्बदार

भयभीत यहा गिरिजाघर भी ।

आतंकित य तुम्ह निहारने

युवा तुम्हारी घरती भा ॥9॥

कुछब पागला के स्मृतिर

माता पर खूनी धब्ब है ।

मदाचार स धोने हगि

आचन के खूनी ध०य ॥10॥

छिद्रिन आचल का लिय हाव

अव मा न तुम्ह पुकारा है ।

उठा लाटला दग सभ्हाला

अव य दग तुम्हारा है ॥11॥

बाया कल्पित करनी हागी

अगार नया करना हागा ।

जा खाया है विश्वास आज वो

तुमका ही भरना हागा ॥12॥

अनुशासन, महनत, दृढ़ता से

भारत का रूप सुधारो तुम ।

जा बपों पहले मलिन हुआ

उस मा का रूप निखारा तुम ॥13॥

तरी शक्ति ही गान बनी
तरी भक्ति पर बान चढी ।

तरी बलिष्ठ भुजाआ से
गपन भारत की गान बढी ॥14॥

इसलिय मघ स गरज उठ्ठा
ले अगडाई त्यागा प्रमाट ।

उत्थान तुम्ह करना हागा
दकर व विश्वास अगाध ॥15॥

×

—

युवाओं से

अरे युवाओं आग आओ, क्षोभ त्याग कुछ करने का ।
आपस में मिल प्यार वाट लो कुछ मसले हल करने का ॥

अपनी रचना का पहिचाना

अपने पर विश्वास करो ।

आपस में ही नर नर कर

अपना ही मत नाश करा ॥

लोह दण्ड है भुजा तुम्हारी

मस्तक हिम सा रूढ़ है ।

अरावली सी चौड़ी छाती

अनद पाव सुन्दर है ।

दलना सब कुछ दिया दब न

तुम्हें आसरा किसका ?

चट्टाना को चीर, वहा दो नीर,

आमरा किसका ?

अपने दम नम पहिचानो

वास कबीरा तुम ही ।

गौतम, भगत यही जन्मा

आजाद सरीखा तुम ही ॥

यौन कमी है बालो तुम में

इतने क्या मायूस हो ? ।

इस युग की तुम महाशक्ति हो

बनते क्या मासूम हा ? ॥

भारत की तबदीर तुम्हीं हो

पर तुम य सौगंध ला ।

हाथ काँड़ शमशीर बने ना

ना कोई दुग्ध हा ॥

करें आरती, दे अज्ञान मंत्र

गवद-पाठ अखड हा ।

चलती रह प्राथनाय भी
 अपना दश अलड हा ॥
 जि दा ताग बन फिरत हा
 तुमको य नी हाग नही ।
 अपन म तुम पूण गति हा
 वरती पर कोई बाभ नही ॥
 लहर पवित्र तुम गगा की
 सीमाग्रा पर तुम हा जवान ।
 तुम वायुदूत तुम क्षीर पूत
 धरती क बट तुम किसान ॥
 तुम साना भी उपजात हो
 तुम ही बटूक चलान हा ।
 जब धनुष वाण लेत कर म
 तुलसी क राम कहात हो ॥
 करन क्रीडा शिशु बनकर
 दैत्या का दते तुम पछाड ।
 दुश्मन की बोली सुनते ही
 क्षरा सी देत तुम दहाड ॥
 तुम द्वैप-भाव का परे हटा
 बजोड श्रखला बन जाओ ।
 नानक के शब्द सूर के पद
 रसखान सम्पदा बन जाओ ॥



द्वैर व्यर्थ के

राज्जे नमाज अत ये मंदिर की घटिया,
गिरिजाधरा की प्राथना गुरु की वाणिया ॥
इसा को नही, सबका ही प्यार वाटा है ।
य हम हैं कि धरम प ईमान बाँटा है ॥
जाति का कवच पहनकर शमशीर धरम की ।
खुद के ही टुकड़े कर लिये न बात रहम की ॥
श्राय ये जमी प तो आवाज एक थी ।
जायेंगे तब भी दशा मय की एक सी ॥
ये सिफ हवस है बुद्ध स्वाध सध है ।
जो पजाव खालिस्तान के भगडे बन ह ॥
गुर, पैगम्बर, राम के जा समरु अथ ल ।
भगडे सभी मिट जायें क्या द्वैर व्यथ ल ? ॥
हिंसा से कभी एषता न पूजी गई है ।
इक नम्रता है जिसमे बिनय दूनी हुई है ॥
मुट्टी को बंद रखने म अपना कायदा ।
चारा अराग लडम भला वान फायदा ? ॥

×

लौह पुरुष

भ्राज दश व तिय लौह पुरुष चाहिय ।
 भ्राज दश व तिय मुभाप पून चाहिय ॥
 ध्यायाज वही चाहिय जो एवना का नाद द ।
 विद्वान वही चाहिय जा मत्र प्यार का पडे ॥
 दक्षिणी तरंगें वभी हूम मे धा गले मिल ।
 धरा रवीन्द्र की वभी वच्छ स जा धा मिल ॥
 गह पूष मार द गय एमा चाहिय ।
 स्नह की बयार न पत एमा चाहिय ॥

धपनी-धपनी डपली व राग अलग बज रह ।
 धपनी-धपनी धापाधापी प्रात धतग बट रह ॥
 भाषा का विबाण वही, रग भेद नीति है—
 पाटों के भडे भी भापस म टवर रह ॥
 दूटता को जाड द बडी एसा चाहिय ।
 धाव दिल के भर मुके जडी एसी चाहिय ॥

जाति-पाति, वण भेन नीति नही पूरबी ।
 अगरण का शरण द पास भाये दूरी भी ॥
 किस भी लगी है नजर ग्रहण कौन लग गया ?
 असमय म यहाँ बुचर वीन चल गया ?
 कूटनीति छत्र द चाणक्य एसा चाहिय ।
 मुदेन हित गुपथ द लक्ष्य एसा चाहिये ॥

गजना जो कर सके हिम के गीग चढ सके ।
 एकता के वास्त अखण्डता वरण सके ॥
 शक्ति परिचय सही समय पर ही कर सके ।
 पय-प्रदशन सही जन जन का कर सके ॥
 बहुजन-हिताय हा कूच एसा चाहिये ।
 बहुजन-सुखाय हो पूत एमा चाहिय ॥

भ्राज दश के लिये लौह पुरुष
 भ्राज दश के लिये मुभाप पूत

मानवता

धम यहाँ का मानवता है बीम यहाँ की मानव है
मातृ भारती के पूजक हम स्वाध पूजता दानव है ।

हिंसा का क्या नाम धम म

व्यक्ति-व्यक्ति का क्या घबराम ?

अविश्वास की राजवाली म

एक दूसरे का बतराय ॥

धम नहीं पापा का पूजक

उही जातियाँ घणा मियाय ।

भाषा नहीं युद्ध की छातक

रग असत्य नहीं सिखलाय ॥

बाई भा हा वश भले ही

तन का ही का ढकता है ।

हो प्रदण चाह बाई भी

भारत म हा बसता है ॥

ऊच-नीच का जाति-पाति का

क्या य पाखण्ड है ?

सब प्रथम हम भारतवासी

य विश्वास अखण्ड है ॥



वेदाग है

उजियार का बाला धव्या बहुत बड़ा ही दाग है ।
गहन अधरे की चरतूतें यहाँ सभी वेदाग ह ॥

टुनिया भर की गदगियाँ,
गगा म है ता गगाजल ।
खात खाकर उस गगा म--
बना न पाय मन निमल ॥
एत सम्य सुशिष्ट समाज क
वाग तुम्ही पहरेदारा ।
दीप तले तो सदा अधरा
तुम ता बस हा रखवारा ।

किस किस का म प्रश्न बनाऊँ धुली युये म भाग है ।
गहन अधरे की चरतूत, यहा सभी वेदाग ह ।

वरिष्ठताया का सूची म,
प्रथम नाम है पाप का ।
पापी की परिभाषा पूछो
पता नही इस बात का ॥
रट रटाये ग्रथा के कुछ
शब्द अटपट दुहराते ।
नाम धम का लेन वाले
नव—केतन है लहराते ॥

मदिर की इक छुद्र घटिका, धो देनी सब पाप है ।
गहन अधर की करतूते यहा सभी वेदाग हैं ॥

आड धम की बम निम्न है
लगा खाता याग का ।
किसके हाण क्या हा जावे
मही बम सवाग का ॥
लाठी वाला भैस हाकता,
स्थिति है ये आज की !
अथ उदर की स्वाथपूर्ति
विपम परिस्थिति आज की ॥

किसका हिन किसके हाया हा कहीं प्रदन परमाथ है ।
गहन अधरे की करतूतें यहा सभी वेदाग है ॥



वेदाग है

उजियार का काला धन्ना बहुत बड़ा ही दाग है ।
गहन अधरे की वस्तुतें यहाँ सभी बदाग है ॥

दुनिया भर की गदगिषी,
गगा म हैं ता गगाजन ।
खात खाधर उम गगा म--
बना न पाप मन निमल ॥
एग सम्य मुशिष्ट समाज क
काग तुम्ही पहरेदारा ।
दीप तले तो सदा अधरा
तुम ता वस हा रखवारा ।

किस किस का म प्रश्न बनाऊँ घुला बुये म भाग है ।

गहन अधरे की वस्तुत, यहा सभी बदाग ह ।

वरिष्ठताग्रा की सूची म,
प्रथम नाम है पाप का ।
पापी की परिभाषा पूछो
पता नहीं इस बात का ॥
रट रटाये क्रिया के कुछ
शब्द अटपट दुहराते ।
नाम धम का लेन वाल
नव—वेतन है लहराते ॥

नैतिकता का दिया ताव धर
 वह कर, हम आजाद है ।
 बणधार हो भ्रष्टाचारी
 राम राज्य का नाद है ।

कौन कर भव श्रम का पूजन कुर्सी ही मव सार है ।

सत्य किसे स्वीकार है ?
 रक्षक का डेरा ले बैठ
 उनको ही नलचाई नजरें ।
 निर्माता का ताज पहन कर
 घोट रहे हैं गद्दे गहरे ॥

हान सत्य का तगा चवाने, कैसे ये आधार हैं ?

सत्य किसे स्वीकार है ?
 छ महीने का अभियन्ता
 मजिन वही सडी हो जाती ।
 उम्र बीतती चप्पल घिसते,
 नहीं भापडी भी बन पाती ॥

मुक्त हसी धईमान हस रहा ईमान बना भव भार है

सत्य किसे स्वीकार है ?
 दवा बना भव जहर विष रहा,
 मनुज मर ज्यो कीट पतगा ।
 चुक जाना मडार वष का,
 मौज कर रहा आज लफगा ॥

जीधन दाता विष द देता किम वी सेवा नि सार है ?

सत्य किसे स्वीकार है ?
 पेत और खलिहान भरे हैं ।
 बाग--उगीचे हर भरे है ।
 पर ये सत्र बागज तब सीमित
 गह-मडार जहर भरे है ।

निगि दिन महा कृपक मरता हु बाध नहर सब धार है
 सत्य किसे स्वीकार है ?

दर्पण (असामाजिक तत्त्वों के नाम)

दण्ड म मुह दख के पूछो
 सत्य किसे स्वीकार है ।
 एक हाथ हिंसा की लाठी
 एक हाथ पाखण्ड है ।
 थोथा बडा धरातल लगता
 अब तो भूठ अखण्ड है ॥

नैसर्गिक सुख जुटे पटे हो सत्य कहा अनिवाय है ?

सत्य किसे स्वीकार है ?
 मधु मिश्रित असत्य की वाली
 चिकनी चुपडी बडी भली ।
 ओट अहिंसा रोज ही हत्या
 चलता है सब गली गली ॥

गर्मों जब बाने धन म हो खत कहा अनिवाय है ?

सत्य किसे स्वीकार है ?
 झडा अयायी का फहरे
 कौन याम के आगे रोय ।
 उअ धीतती रोते—रोते
 कौन कहा पर आचल धोय ?

नही सुरक्षित कुछ भी लगता मन म भरे विकार ह ।

सत्य किस स्वीकार है ?
 प्रेम खुला चौरह विकता
 विनापन और किताना मे ।
 हया नील सूली पर लटके
 नज्जा गई हिंसावा मे ॥

अथहीन सय धम-कम है पश्चिम ही आधार है ।

सत्य किसे स्वीकार है ?

नैतिकता को दिया ताक धर
 वह कर हम आजाद है ।
 कणधार ही भ्रष्टाचारी
 राम राज्य का नाद है ।

कौन कने अब थम का पूजन कुर्सी ही सज सार है ।

सत्य किसे स्वीकार है ?

रक्षक का ठेका ले बैठ
 उनको ही तलचाई नजरें ।
 निर्माता का ताज पहन कर
 खोद रहे हैं गद्दे गद्दे ॥

हाथ स्वयं का तगा चबाने, कैसे ये आधार है ?

मृत्यु किसे स्वीकार है ?

छ महीन का अभियन्ता
 मजिल वही सड़ी हो जाती ।
 उम्र बीतती चप्पल घिसते,
 नहीं झापड़ी भी बन पाती ॥

मुक्त हसी वर्डमान हस रहा ईमान बना अब भार है

मृत्यु किसे स्वीकार है ?

तबा बना अब जहर विष रहा,
 मनुज मरे ज्यो बीट पतगा ।
 चुक जाता मठार वष का
 मीज कर रहा आज लफगा ॥

जीवन दाता त्रिप दे देता किस की सेवा नि सार है ?

सत्य किस स्वीकार है ?

यत और खलिहान भर हैं ।
 याग-बगीचे हरे भरे हैं ।
 पर ये सब कागज तक सीमित
 गूह मठार जहर भरे हैं ।

निगि दिन यहा कृपक मरता है बाध नहर सब धार है

मृत्यु किसे स्वीकार है ?

साता सठ तात तर धादर
 मजदूरा की या नी हालत ।
 बागज पर बधक छट रहे,
 असलियत की वहाँ हिफाजत ॥

एध्याछून या भूत वही है दीन दुखी की मार है ।
 सत्य किसे स्वीकार है ?

सिफ याजनायें गढ़ने से,
 बागज पर निघकर पढ़ने से,
 हो जाता युग-परिवर्तन
 नता क्या मरन मरन म ?

कम जहा हुवारें भरता
 मगल गात वही हान है ।
 उन्नति बाह यामती उनको
 कमठ धम पूजक हान है ।

तुम्ह नही विश्वास अगर तो—
 अपना ही इतिहास भावनों ।
 शायद कुछ पत्ते पड जाये
 नगर बोस या लाक नाम ना ॥

थोडा-थोडा सबस लाग—
 पूरा मनुज तुम बन जाओगे ।
 तुम मे भी इतिहास बनेगा
 नया अगर कुछ गड पाओगे ॥

हार मनुजता मे मानो तुम गलती नही सुधार है ।
 सत्य किसे स्वीकार है ?



श्रद्धा

जुलमा सितम तो नहीं आबमियत की इककरी,
पर यही अल्फाज खुदा में मजहूँ रहती है आदमी ।
है नहीं इस्तियार खुद की हवस ओ ईमान पर,
नोहमते पर दूसरे पर मड रहा है आदमी ॥

× × ×

नेमते जितनी खुदा की सबसे बेहतर आदमी,
खुद-परस्ती के लिये क्यों लड रहा है आदमी,
ताकते जेहन में दी कामयबी के लिये—
गोया खुदगर्जी में ही मशगूल है अब आदमी ।

× × × ×

नापाक इरादा पे जिये इसान नहीं हैं
गैरा का हक छीन ले इसाफ नहीं है,
द दोस्ती का हाथ ये दुश्मनी हैं क्यों—
पल-पल में डगमगाये ईमान नहीं हैं ।

× × × ×

इसानियत पे बदनुमा धब्बा तो मत बनिये,
नैतिकता खरिद पर हब्बा तो मत बनिये
न गा सकें तो मत गाइये मिलन के गीत—
पर कोपलो के बीच कब्बा तो मत बनिये ।

× × × ×

यति, लय, सुर और ताल मिले तो जीवन मिलता गीत को
ध्रम और लगन कम को छूते हार पूजती जीत को
नहीं असम्भव कुछ भी होता गन्द कोप से इसे निकाला
एव शपमा एक ईंट क्या भूल गये इस रीत को ?

मुक्तक

इतनी भी क्या शान्ति, शान्ति क्रन्दन बन जाये,
इतना क्या गाम्भीर्य, स्वयं मथन बन जाये,
अरे शान्ति के देव ! देव हो, तुम्हीं पुजारी-
ऐसी भी क्या प्रीति, हास्य रोदन बन जाये ।

× × × ×

हम शान्ति के पुजारी हैं ये आदत है पुरानी,
इसका सबब ये नहीं कि वफा जवानी,
उठती है समन्दर में कभी आग की लपटें-
है खून इन रंग में, बहना नहीं पानी ।

× × ~ ×

जो रंग सजाये वह तस्वीर बनने नहीं देंगे,
तुमको भारत की तकदीर बनने नहीं देंगे,
सपनों को सजाओ सवारा अपनी हृद तक--
भारत से जुदा वो कश्मीर बनने नहीं देंगे ।

× × × ×

घागा है महज प्यार का कुछ नहीं है ये,
व्यापार महज प्यार का कुछ नहीं है ये,
जाने की चीज हम भी है रहने के हम नहीं-
मुट्टी है बाद लाख की वर्ना कुछ नहीं है ये ।

× × × ×

भिन्न दिशा को जाती सड़कें मिलती सब चौराहे पर,
फुटपाथो या गलियारा जाती हो दोराहे पर,
मुड़ती, तुड़ती सकरी, चौड़ी, भिन्न भिन्न सब रूप लिये-
क्षेत्री हैं सदेश मनुज को छितरे क्यो इकराहे पर ।



